

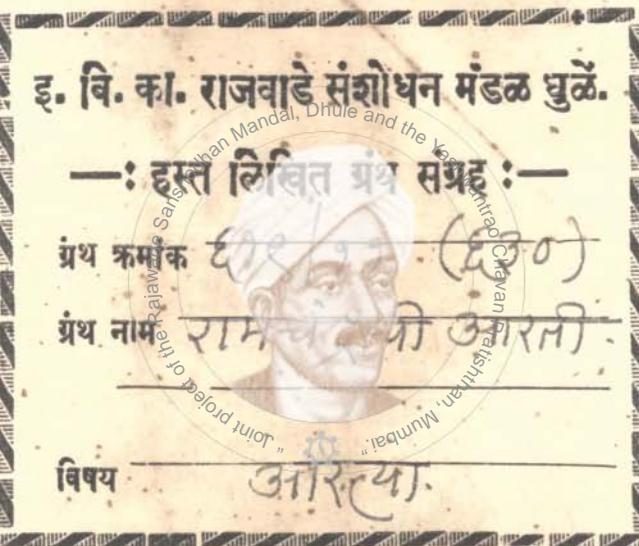
५९८ | ९९

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुक्ते.

—: दस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ६२४ (६३०)
ग्रंथ नाम राम नी आरती

विषय आरती



१॥ नियश्रीराममंत्रतद्वाचा॥ नरहरित्रिष्वयविन्
२॥ जउताहरिहेप्रतीतयेसुमती॥ ७३॥ अत्रीगो
३॥ जजनिताश्रीभक्तरघुपतिजानकीमाता॥ अविन
४॥ मार्वेकसुनीनरहरिवाणीप्रवर्तलीस्तवनी॥ ७४॥
५॥ श्रीरामार्थसमाप्त॥ श्रीसीतारामचंद्रार्पणमस्तु
६॥ एवंसंख्यासंकृतश्लोक॥ ७९॥ प्राकृतमयमंगवा
७॥ चरणश्लोक॥ ७५॥ एवंसंख्या॥ २२४॥ ॥४॥

॥ अत्र यज्ञात रामचंद्राची॥

८॥ दद्रारथनदनुरामानिकप्रतवमहिमा॥ शिशुप
९॥ णिमागंडनेलीअसुरायमधामो॥ राष्ट्रसमारुनिर
१०॥ हि सिगाधिजमखहोमा॥ उद्गरितिपदलाउनित्र
११॥ षष्ठिगोत्रमवामा॥ १॥ जयदेवजयदेवरविकुलअव
१२॥ तंसाप्सीतानाथारघुपतिशिवमानसहंसा॥ ४॥
१३॥ अंगुलिप्रवचापात्रेनिजद्राक्षीवरिला॥ विजयीहोउ
१४॥ नियेतांशुगुरुराक्षीहरिली॥ स्वपुरीउसवकसुनीवस
१५॥ धार्घविली॥ जनकादिकसुहदान्तीमहिमावाढि

Save Rajawade Sanskrit Mandal, Dhule and the
Yogwantrao Chaitanya Mandir, Dombivali

॥ विली ॥ ३ ॥ कै केयी मिषुकरनी जासा विपिन ला ॥
॥ सीता ने नवदरा मुख मागुण पाषा त्रा ला ॥ दगडा ता
॥ कुनि सिंधू वरिष्ठ निट के ला ॥ मिक्कु निमर्क टघा लि
॥ सिवेदालं के ला ॥ ३ ॥ घटकर्णि सहरा वणवधु नी त्रा का
॥ री ॥ इसमारु निसर्व हिके ले अधिकारी ॥ भल वि
॥ भीषण लं के देवा तें स्वपुरी ॥ सीता घेउ निये सीसा के ती
॥ तरी ॥ ४ ॥ सामुज सातमज कु द्रालव पा विसिधरणी
॥ तें ॥ श्रीरामालवना में अप संकट हरण तें दशयादवयहि
॥ तूची अघटित तवन रता ॥ निश्चय जाणु निनरहरि
॥ दधरि दृढ़ चिन्ह अप जये न जये ते ॥ ॥ ५ ॥ ५
॥ अमग ॥

॥ मुख महा विष्णु चैतन्या चें मूर्ख ॥ सांघराय फक्ते थुनी
॥ यांगे ॥ हंस रूपे ब्रह्मा उपदे सी श्रीहरी ॥ चतुःश्लोकी
॥ चारी माणवता चाते गूज वीधाता सांगे नारदा सी ॥ ना
॥ रदे व्यासा सानि रोपी लें ॥ ३ ॥ राघव चैतन्य के लें अनुष्ठा
॥ न ॥ या सीदै पायन ब्रस ब्रजाले ॥ ४ ॥ राघवा रारण के
॥ राव चैतन्य ॥ बाबाजी सपूर्ण कृपा या ची ॥ ५ ॥ स्वभी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com